जगमगाया इंदौर, सरकारी व निजी इमारतों पर सजी रंग-बिरंगी रोशनी

राजवाड़ा से कलेक्टर कार्यालय तक झालरों और एलईडी लाइटों से सजे भवन

इंदौर. दीपावली पर्व को लेकर शहर पूरी तरह से तैयार है. दिवाली पर शहर की सरकारी इमारतों को दुल्हन की तरह सजाया गया है. राजवाड़ा, कलेक्टर कार्यालय, नगर निगम मुख्यालय, संभागायुक्त कार्यालय और जिला कोर्ट सहित सभी प्रमुख सरकारी भवनों के साथ निजी इमारतों पर रंग-बिरंगी झालरें, एलईडी लाइटें और फूलों की सजावट की गई है. शाम होते ही पूरा शहर रोशनी से जगमगा उठता है.

राजवाड़ा और उसके आसपास का क्षेत्र सबसे ज्यादा आकर्षण का केंद्र बना हुआ है. यहां लगी लाइटिंग को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग अपने परिवार के साथ पहुंच रहे हैं.इसके अलावा शहर के मॉल, निजी इमारतों, संस्थानों पर भी आकर्षक साज सज्जा की गई है. दुकानों को भी आकर्षक रूप से सजाया गया है. वहीं, पुलिस प्रशासन ने भी भीड़ को देखते हुए प्रमुख स्थानों पर अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया है. कलेक्टर कार्यालय के सामने और राजवाड़ा क्षेत्र में ट्रैफिक व्यवस्था के लिए विशेष इंतजाम किए गए हैं.

लोग भी उत्साहित

स्थानीय निवासी राकेश शर्मा ने बताया हर साल इंदौर दिवाली पर और खूबसूरत लगता है, लेकिन इस बार सरकारी इमारतों की सजावट ने शहर की रौनक और बढ़ा दी है. निधि सिंह ने कहा कि हमारे शहर की बात ही अलग है. त्योहार को दिल से मनाते हैं. यह बात शहर की सजावट देखकर लगता भी है. पूरा शहर आकर्षक रोशनी से जगमगा रहा है.









पटाखों को लेकर लोग उत्साहित-दिवाली पर पटाखों की बिक्री के लिए प्रशासन ने इस बार विशेष व्यवस्था की है. शहर में पटाखा बाजार के लिए खास जगहों को चिन्हित किया गया है - जिसमें विजय नगर, तिलक नगर, दशहरा मैदान, चिमनबाग मैदान अन्य जगह हैं. लोगों में पटाखों की खरीदारी को लेकर उत्साह है. पटाखा व्यापारी विकास ने बताया इस बार लोगों में ग्रीन पटाखों को लेकर काफी जागरूकता है. अनार, चकरी और फुलझड़ी सबसे ज्यादा बिक रही है.

फूलों की मांग से महका बाजार-दिवाली पर फूलों की मांग भी कई गुना बढ़ गई है. सीतलामाता बाजार, मंडी मोरी और मालवा मिल के फूल बाजार में सुबह से ही भीड़ लगी हुई है. इस बार गेंदा फूल के दाम 3 गुना बढ़ गए हैं. सामान्य दिनों में 50 रुपये किलो बिकने वाला गेंदा अब सौ से 150 रुपये किलो बिक रहा है. गुलाब का फूल 200 रुपये किलो और मोगरे की माला 100 से 150 रुपये में बिक रही है. फूल व्यापारी रामू मालवीय ने बताया दिवाली पर लोग घर, दुकान और मंदिर सजाने के लिए फूल खरीद रहे हैं. इस बार बाहर से आने वाले फूल कम हैं, इसलिए दाम बढ़े हैं, फिर भी बिक्री अच्छी हो रही है.

रेडी-टू-यूज पूजन किट से आसान हुई लक्ष्मी पूजा

दिवाली की तैयारियों के बीच सबसे बड़ा और पेचीदा काम होता है—महालक्ष्मी पूजन के लिए दर्जनों छोटी-बड़ी पूजन सामग्रियों को एक-एक कर बाजार से जुटाना। बदलते दौर में जहाँ एक ओर समय की कमी और व्यस्त दिनचर्या है, वहीं दूसरी ओर ट्रैफिक के बीच अलग-अलग दुकानों के चक्कर काटना आम नागरिक के लिए चुनौतीपूर्ण हो जाता है . इस व्यावहारिक समस्या को देखते हुए इस बार शहर में ऑल-इन-वन पूजन किट का चलन तेजी से बढ़ा है, जिससे न केवल समय की बचत हो रही है,मालगंज क्षेत्र में इस बार ऐसा ही एक एकीकृत पूजन बॉक्स पेश किया गया है, जिसमें महालक्ष्मी, श्रीगणेश और माता सरस्वती के पाना चित्र के साथ-साथ पूजन में उपयोग होने वाली 40 से अधिक आवश्यक वस्तुएँ एक ही स्थान पर उपलब्ध कराई गई हैं . इसमें धानी, पतासे, खड़क, कपूर, रोली, गंगाजल और अक्षत जैसी सभी मूलभूत सामग्रियां शामिल हैं . पुण्डरीक पालरेचा, मितेश पालरेचा ने बताया कि इससे उन परिवारों और युवाओं को विशेष मदद मिलेगी जो पहली बार या अकेले पूजन कर रहे हैं . पूजन के पौराणिक और आध्यात्मिक महत्व को सरल भाषा में समझाने का प्रयास किया गया है, ताकि हर कोई पूरी आस्था और सही विधि-विधान से अनुष्ठान संपन्न कर सके .

एक नजर में

झुग्गीवासी बच्चों के साथ दीपावली सेलिब्रेशन



इंदौर . जब लोग दीपावली में अपने घर परिवार को सजाने संवारने में लगे थे ऐसे गुजराती आर्ट्स एंड लॉ कॉलेज एलुमनी के सदस्य सुपर कॉरीडोर स्थित भंवरासला कांकड़ की झुग्गी बस्ती के निर्धन परिवार के बच्चों के बीच दीपावली के उपहार, पटाखे, कपड़े, मिठाई और चश्मे लेकर खुशियाँ मनाने पहुंच गए . एलुमनी ग्रुप संयोजक प्रवीण नागदिवे ने बताया कि झुग्गियों में जहाँ 50 से ज्यादा श्रमिक परिवार रहते हैं . वहाँ सामान्य दिनों में भी जीवन यापन मुश्किल है वहाँ दीपावली की पूर्व संध्या पर एलुमनी के साथियों ने इन वास्तविक जरूरतमंद 72 बच्चों के बीच पहुंचकर इन बच्चों को पटाखे, मिठाइयां, फल, कपड़े, रंगीन चश्मे, नमकीन आदि प्रदान कर इन बच्चों को खुशियां प्रदान की . इस अवसर पर झुग्गीवासी श्रमिक परिवार के बच्चों ने गीत कविताएं सुनाई .ग्रुप की ओर से अनिल गायकवाड़, हुकुमचंद सूर्या, जीतू गुप्ता, शैलेन्द्र बघेल, प्रशांत इंदुरकर और जीतू खरे ने भी गीत सुनाए । झुग्गी बस्ती में बच्चों को शिक्षा का ककहरा सिखाने वाली टीचर वंदना घरडे और बिन्दा दुबे मैडम का भी साड़ी, फल, मिठाई से सम्मान किया गया . कार्यक्रम का संचालन सुनील गुप्ता व शैलेन्द्र बघेल ने किया . स्वागत सत्कार स्वाति मोहिते व पिंकी यादव ने किया और आभार गोपाल बोरासी ने माना .

फतेहपुरिया समाज ने जरूरतमंदों को बांटे उपहार



इंदौर . फतेहपुरिया समाज के सदस्यों एवं समाज बंधुओं ने मल्हारगंज थाना भवन के पास स्थित अपने समाज भवन पर शनिवार को सुबह जरुरतमन्द लोगों को मिठाई, नमकीन एवं अन्य उपहार भेंट किए . समाज के अध्यक्ष कैलाश बिदासरिया, सचिव सीके अग्रवाल एवं परामर्शदाता देवकीनंदन सिंघानिया ने बताया कि समाज के वासु टिबडेवाल, राजेंद्र टेकड़ीवाल, विनोद सिंघानिया, नंदकिशोर जैन गर्ग, भरत केडिया, अरविन्द किशोरीलाल अग्रवाल एवं अन्य सदस्यों के सहयोग से यह सेवा कार्य किया गया . इस दौरान 300 से अधिक लोगों ने इस सेवा कार्य का लाभ उठाया और सभी समाज बंधुओं को दीपावली की पूर्व बेला में बधाई एवं शुभकामनाएं समर्पित की .

वेद वेदांग विद्यापीठ के बटुकों को बांटे उपहार



इंदौर . विद्याधाम परिसर में संचालित स्वामी गिरिजानंद सरस्वती वेद वेदांग विद्यापीठ के 200 से अधिक वेदपाठी बटुकों को सांसद शंकर लालवानी के मुख्य आतिथ्य एवं आश्रम के आचार्य पं . राजेश शर्मा के सानिध्य में सांसद प्रतिनिधि विनोद सिंघल की ओर से दीपावली के उपलक्ष्य में उपहार भेंट किए गए . इस अवसर पर सांसद शंकर लालवानी ने बटुकों एवं तुषार अग्रवाल, रितेश पाटनी, गोपाल महाजन, विशाल पुरोहित एवं लोकेश मीणा की उपस्थिति में बटुकों को भारतीय संस्कृति, संस्कारों एवं सेवा भावना का महत्व बताया . सांसद लालवानी ने सभी बटुकों को दीपावली की बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए उनके साथ आतिशबाजी भी की और उन्हें नसीहत दी कि दीपावली पर आतिशबाजी करते समय पूरी सावधानी बरतें तथा वायुमंडल में फैलने वाले प्रदूषण की रोकथाम के लिए सांकेतिक रूप से ही आतिशबाजी का प्रयोग करें . इस अवसर पर संजीवनी हॉस्पिटल की नवनियुक्त चिकित्सक डॉ . अदिति सिंघल का सम्मान भी किया गया .

गोवर्धन पूजा के लिए सजने लगे बाजार

इंदौर. दीपावली के बाद होने वाली गोवर्धन पूजा को लेकर शहर के बाजारों में तैयारियां शुरू हो गई हैं. घरों की सजावट और पूजन सामग्री के साथ गाय, बछड़े, बैल और भैंस के श्रृंगार में इस्तेमाल होने वाला सामान भी दुकानों पर नजर आने लगा है. रंग-बिरंगे फूल, मोरपंख, घुंघरू, मालाएं और सजावटी पट्टियां त्योहार से जुड़ी पारंपरिक खरीदारी का हिस्सा हैं. गोवर्धन पूजा पर पशुओं को सजाने की यह परंपरा आज भी ग्रामीण संस्कृति से जुड़ी हुई है।

गोवर्धन पूजा के अवसर पर पशुपालक अपने मवेशियों को नहलाकर और साफ-सफाई करने के बाद उनका श्रृंगार करते हैं. इसके लिए उनके गले में सजावटी मालाएं और



गाय-बैल के श्रृंगार का सामान खरीद रहे लोग

घुंघरू पहनाए जाते हैं. वहीं, मोरपंख, रंगीन फूलों और अन्य सजावटी वस्तुओं से भी उन्हें आकर्षक रूप दिया जाता है. बाजारों में उपलब्ध अलग-अलग तरह की सामग्री के बीच लोग अपने पशुओं के आकार और जरूरत के अनुसार सामान चुन सकते हैं. दुकानदार विजय छोकर ने बताया कि गोवर्धन पूजा पर गाय-बैल के श्रृंगार के लिए घुंघरू, रंग-बिरंगी मालाएं, मोरपंख और सजावटी सामान की खरीदारी की जाती है. यह

ग्रामीण परंपरा से जुड़ा है पर्व

गोवर्धन पूजा का ग्रामीण जीवन में विशेष महत्व है . खेती-किसानी और पशुपालन से जुड़े परिवार इस अवसर पर गाय और अन्य मवेशियों का पूजन कर उनके प्रति सम्मान व्यक्त करते हैं . कई स्थानों पर पशुओं को तेल लगाया जाता है और पारंपरिक तरीके से सजाकर उनकी पूजा की जाती है . दीपावली के अगले दिन मनाए जाने वाले इस पर्व में पशुधन के प्रति कृतज्ञता और प्रकृति से जुड़ाव की भावना भी दिखाई देती है . आधुनिक जीवनशैली के बीच इस तरह की पारंपरिक तैयारियां लोक-संस्कृति और पुरानी रीति-रिवाजों को आगे बढ़ाने का माध्यम बनी हुई हैं .



शरीर नहीं आत्मा का रूप निखारें

इंदौर . केसरी वाटिका में आयोजित द्विशताब्दी गुरुराज स्पर्श चातुर्मास के अंतर्गत गच्छाधिपति जैनाचार्य विजय नित्यसेनसूरीश्वर महाराज साहब की पावन निश्रा में धर्मसभा आयोजित हुई . इस अवसर पर विद्वदरत्न विजयजी ने मानव जीवन की दुर्लभता, आत्मस्वरूप की पहचान एवं सम्यक दर्शन के महत्व पर प्रभावशाली प्रवचन देते हुए कहा कि मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ और मूल्यवान है . देवता भी जिस मानव भव की आकांक्षा रखते हैं, उसे प्राप्त करके आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए . उन्होंने संदेश दिया कि शरीर का नहीं, आत्मा का रूप निखारें . संसार के पीछे नहीं, आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ें . राजेश-प्रिया जैन युवा ने बताया कि प्रवचन के दौरान मृग और कस्तूरी का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि जिस प्रकार हिरण कस्तूरी की सुगंध को जंगल में खोजता है, जबकि वह उसकी अपनी नाभि में ही होती है, उसी प्रकार मनुष्य भी वास्तविक सुख को संसार में तलाशता रहता है, जबकि आत्मिक आनंद उसके भीतर ही विद्यमान है . कार्यक्रम संचालन नीरज सुराणा ने किया एवं आभार महेंद्र बागवाला ने माना।

सनातन संस्कृति में सिक्कों में भी बसी है मां लक्ष्मी की दिव्य छवि

इंदौर. भारतीय सनातन संस्कृति में देवी महालक्ष्मी को आदिकाल से धन, वैभव और समृद्धि की अधिष्ठात्री माना गया है. दीपावली पर माँ लक्ष्मी के पूजन के साथ प्राचीन सिक्कों पर अंकित उनकी छवि का अध्ययन करते हुए प्रख्यात मुद्रा विशेषज्ञ एवं संग्रहकर्ता डॉ. गिरीश शर्मा आदित्य ने अपने निष्कर्ष में बताया है कि आदिकाल से ही भारतीय मुद्राओं में लक्ष्मी को समृद्धि का प्रतीक माना गया है. लगभग प्रत्येक शासनकाल में देवी लक्ष्मी के चित्रों और स्वरूपों वाले सिक्के प्रचलन में थे. अनेक सिक्के ऐसे भी हैं जिनमें दोनों ओर हाथियों द्वारा अभिषेक किए जाने के मनोहारी दृश्य मौजूद हैं. इंदौर न्यू मिसमेटिक सोसायटी की एक विशेष बैठक में डॉ.



गिरीश शर्मा आदित्य ने अपने संग्रह में मौजूद सिक्कों का प्रदर्शन करते हुए कहा कि इन सिक्कों में गाहडवाल शासक (1114 से 1154 ईस्वी) में गोविन्द चन्द्र के शासनकाल की स्वर्ण मुद्रा सहित इसके पूर्व की मुद्राओं में भी देवी लक्ष्मी की विभिन्न स्वरूपों की तस्वीरें मौजूद हैं.

दीपावली की खुशियों के बीच बेजुबानों की चिंता

इंदौर. दीपावली का त्योहार जहां लोगों के लिए खुशियों, रोशनी और उत्साह का प्रतीक है, वहीं बेजुबान जानवरों के लिए यह कई बार डर और परेशानी लेकर आता है. पटाखों की तेज आवाज, धुआं और बढ़ता वायु प्रदूषण जानवरों के स्वास्थ्य पर बुरा असर डालते हैं. खासकर कुत्ते, बिल्ली और पक्षी पटाखों की आवाज से काफी घबरा जाते हैं. ऐसे में शहर में पालतू जानवरों को रखने वाले लोग दीपावली के दौरान उनकी सुरक्षा को लेकर विशेष सावधानी बरतते हैं. पशु चिकित्सक डॉ. अमन साहू ने बताया कि दीपावली के दौरान पटाखों की तेज आवाज से जानवरों में डर और तनाव की स्थिति पैदा हो सकती है. कई बार कुत्ते और बिल्लियां घबराकर इधर-उधर भागने लगते हैं. वहीं पटाखों से निकलने वाला धुआं और प्रदूषण उनके श्वसन तंत्र को

पटाखों के शोर और धुएं से जानवरों को होती है परेशानी



अंशुमन

प्रभावित करता है. इससे उन्हें सांस लेने में परेशानी, आंखों में जलन और पानी आने जैसी समस्याएं हो सकती हैं. छोटे जानवरों और पक्षियों पर भी इसका असर देखने को मिलता है. इसके अलावा पटाखों के अवशेष और कचरा भी जानवरों के लिए नुकसानदायक हो सकते हैं. तेज आवाज से पक्षी अपने घोंसले छोड़कर उड़ जाते हैं और कई बार रास्ता भटक सकते हैं.



अमन साहू

वहीं अंशुमान, जिन्होंने घर में डॉग पाल रखा है, बताते हैं कि दीपावली के समय अपने पालतू डॉग की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना पड़ता है. पटाखों की आवाज से डॉग घबराएं नहीं, इसके लिए उसे घर के अंदर सुरक्षित और शांत जगह पर रखा जाता है. खिड़की-दरवाजे बंद रखे जाते हैं, ताकि बाहर का शोर और धुआं कम पहुंचे. इस दौरान उसे अकेला छोड़ने के बजाय परिवार के सदस्य उसके साथ रहते हैं और उसे सहज रखने की कोशिश करते हैं. साथ ही समय पर खाना-पानी देने और उसकी नियमित दिनचर्या बनाए रखने का भी ध्यान रखा जाता है. पटाखों की आवाज से उसका ध्यान हटाने के लिए घर में हल्का म्यूजिक या टीवी भी चलाया जा सकता है.

दीपावली के दौरान पालतू जानवरों के साथ-साथ सड़क पर रहने वाले बेजुबान जानवरों का भी ध्यान रखना जरूरी है. लोग अपने घरों के आसपास रहने वाले कुत्तों और बिल्लियों को पटाखों से दूर रखें और उनके लिए सुरक्षित जगह व पानी की व्यवस्था करें. जानवरों के आसपास पटाखे जलाने से बचना चाहिए.

प्रदूषण कोई मरीज कमरे में कैद तो कोई गांव चला जाता है...

दीपावली पर आतिशबाजी अस्थमा मरीजों के लिए भारी

इंदौर. दिवाली का त्योहार आते ही पटाखों की आवाज और उनसे निकलने वाला हानिकारक धुआं हवा में घुलने लगता है. लोगों के लिए खुशियों का मौका होता है लेकिन अस्थमा के मरीजों की मुश्किलें बढ़ जाती हैं. खासकर सीनियर सिटीजन मरीज जल्दी प्रभावित होते है. दिवाली के दौरान हल्के और गंभीर दोनों तरह के अस्थमा मरीजों को परेशानी होती है.

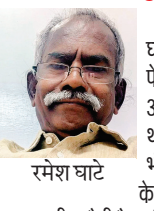
अस्थमा के मरीजों के लिए पटाखों के धुएं के संपर्क में कुछ मिनट रहना भी नुकसानदायक हो सकता है. इस मामले पर डॉक्टर हर्ष त्रिवेदी



हर्ष त्रिवेदी

का कहना है कि पटाखों में मौजूद पीएम2.5 जैसे पार्टिकल्स सांस की नली में सूजन और जलन पैदा करते हैं. अस्थमा के रोगियों की पहले से ही सांस की नलियां सेंसिटिव होती है. इसलिए पटाखे और प्रदूषण उनकी परेशानी बढाते है. इससे अस्थमा के मरीजों को लगातार खांसी, सांस लेने में परेशानी, घरघराहट, सीने में भारीपन या रात में खांसी बढ़ने जैसी दिक्कतें हती हैं. ऐसे में अस्थमा के मरीजों को दिवाली में कुछ खास बातों का ध्यान रखना चाहिए. इससे बचाव के लिए इमरजेंसी दवाएं साथ रखें. अगर किसी अस्थमा मरीज को अचानक सांस लेने में परेशानी होने लगे, तो उसे डॉक्टर द्वारा पहले से बताई गई इमरजेंसी दवाओं और रिलीवर इनहेलर का इस्तेमाल निर्धारित निर्देशों के अनुसार करना चाहिए. इसी विषय पर हमने आस्था मरीजों से बातचीत कर जाना कि खुशियों के इस त्योहार को वो खुद को सुरक्षित रखकर कैसे मनाते है.

गांव चले जाते है बुजुर्ग पेशेंट



रमेश घाटे

रिटायर्ड शिक्षक रमेश घाटे कई वर्षो से अस्थमा पेशेंट है . उनका कहना है कि अस्थमा मरीज के लिए थोड़ी सी धूल मिट्टी में रहना भी हानिकारक है . दिवाली के दौरान खुद को सुरक्षित रखना बड़ी चुनौती है इसलिए वो दिवाली के लिए घर में होने वाली साफ सफाई से पहले ही महाराष्ट्र में अपने गाँव चले जाते है . गांव में हरियाली ज्यादा है और प्रदूषण कम . सबके साथ सुरक्षित रहकर दिवाली मनाने का अलग ही आनंद है .

दिवाली सेलिब्रेशन फार्म हॉउस पर करता हूं



राजकुमार अठवानी

सिंधी कॉलोनी निवासी राजकुमार अठवानी बताते है कि कुछ साल पहले दिवाली पर पटाखे के धुएं व प्रदूषण से उनका अस्थमा बहुत ज्यादा बिगड़ गया था, अब दिवाली आने से पहले ही ज्यादा बाहर नहीं जाता हूं और खुद को घर के अंदर सुरक्षित रखते हूं . दिवाली पर खुद का खास ख्याल जरूर रखना पड़ता है . दिवाली की सुबह फार्म हाउस पर जाकर पूरी सुरक्षा के साथ सेलिब्रेट करता हूं .

कमरे में कैद रहना पड़ता है



सरोज जोशी

मणिकबाग निवासी सरोज जोशी के मुताबिक दीवाली पर होने वाले धुएं से हल्के और गंभीर दोनों तरह के अस्थमा मरीजों को परेशानी होती है। वो खुद अस्थमा पीड़ित है . उनका कहना है कि इस दौरान वो खुद को कमरे में बंद रखती है . धुआं और प्रदूषण घर के अंदर न आ सके इसलिए दो दिन उनके कमरे की खिड़की और दरवाजे बंद रहते है . उनके परिवार के लोग भी उनकी सेहत का ख्याल रखते हुए कम पटाखे चलाते हैं .